श्री जी गोसदन
नोएडा

गो संदेश

वर्ष : 12 • अंक : 10 • जनवरी, 2025

सम्पादकीय

आदरणीय बन्धुवर,

सादर अभिवादन!

आशा है सानन्द होंगे। सर्दी की विकरालता लगभग समाप्ति पर है। वैसे तो इस बार अपेक्षाकृत सर्दी कम ही रही है। कोहरा तो कुछ ही दिन दिखा। मकर संक्रान्ति के बाद सूर्य भगवान उत्तरायण हो जाते हैं। अब धीरे–धीरे उष्णता बढ़ेगी। नव चैतन्यता बढ़ेगी। वसन्त ऋतु का आगमन हो गया है। आइये हम सभी आलस्य व प्रमाद समाप्त कर सृजनात्मकता में अग्रसर हों।

प्रयागराज सनातन धर्मियों के विशाल कुम्भ का आश्रय स्थल बना हुआ है। कुम्भ की प्रत्येक घटना रोमांच पैदा कर रही है। शायद ही ऐसा कोई भी सनातन धर्मी होगा जिसका कुम्भ में जाने का मन न हो। परिस्थितवश जाना न हो पाये यह दूसरी बात है। आदरणीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में यह महाविशाल आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हो, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

नोएडा में भी दिव्य श्री रामकथा का आयोजन मंगलमय परिवार न्यास के तत्वाधान में आयोजित हो रहा है। यह 1 फरवरी से प्रारम्भ होकर 9 फरवरी तक चलेगा। कथा का समय सांय 3 से 6 बजे तक रहेगा। यह कथा वृन्दावन में चल रही श्री जी की रसोई की सहायतार्थ है। हम सभी का प्रयास है कि रसोई को एक करोड़ का आर्थिक सहयोग नोएडा निवासियों के द्वारा अवश्य ही हो जाये। आप से प्रार्थना है कि आप कथा में अपने मित्रों व संबंधियों के साथ अवश्य ही सहभागी हो।

पिछले कई बजटों में गौमाता के आर्थिक महत्व हो रेखांकित करते हुये अनेक घोषणायें की गई है। उनको व्यवहार रूप में परिवर्तन करने में प्रदेश व केन्द्र की सरकार लगातार प्रयासरत है। 1 फरवरी को वित्त मंत्री आदरणीय सीतारमण जी गौमाता आधारित कुछ और घोषणायें करेंगी ऐसा विश्वास है। गाय के बिना उत्तम कृषि, उत्तम कृषि के बिना भारत का विकसित राष्ट्र बनना लगभग असम्भव ही है। अतः गौमाता को उचित महत्व मिलना/देना परम आवश्यक है।

शेष पृष्ठ 3 पर...

अध्यक्ष की कलम से

परम स्नेही मित्रगण,

स्नेह नमन!

मैं समस्त श्री जी गो सदन परिवार की ओर से सभी स्वजनों की समृद्धि स्वास्थ्य जीवन की ईश्वर व गौमाता से कामना करता हूँ। आप सभी परिवारजनों का जीवन सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्नचित रहे।

मित्रों जनवरी, 2025 का हवन भारत विकास परिषद् स्वर्णिम शाखा की कार्यकारणी द्वारा कराया गया। सभी लोगों ने गौशाला में आयोजित हवन में आहुति दी। हवन में लगभग 650 लोगों ने गौमाता का आशीर्वाद एवं प्रसाद ग्रहण किया।

मित्रों इस माह 56 भोग श्री मनीष अग्रवाल जी, सेक्टर 33, नोएडा द्वारा कराया गया। उन्होंने परिवार व मित्रों सहित गौमाता को 56 भोग खिलाकर आशीर्वाद लिया, बहुत सुन्दर आयोजन हुआ।

मित्रों लेडीज क्लब, सेक्टर 14, नोएडा ने गौशाला में 30 जनवरी को पिकनिक मनाई। जिसमें उन्होंने गोसेवा, बैलगाड़ी की सवारी, पिकनिक खेल, भोजन प्रसाद का आनन्द लिया। बहुत ही मनोरम दृश्य था। एक बार गौशाला जरूर आये।

मित्रों आप को बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि उत्तर प्रदेश दिवस पर गौशाला को गोसंवर्धन, गोपालक का उत्कर्ष पुरस्कार उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मिला।

26 जनवरी, 2025 को दैनिक जागरण द्वारा आयोजित स्वस्थ समाज सरोकार में 'राष्ट्रगान देश का मान' कार्यक्रम में श्री जी गोसदन (गौशाला) को गोपालन की सुन्दर व्यवस्था के लिए सम्मानित किया गया। गौशाला में किए गए कार्यों की सराहना की गयी।

2 फरवरी, 2025 को मासिक हवन है तथा 3 फरवरी को वसन्त पंचमी है जिसमें आप गौशाला में सादर आमन्त्रित हैं। आप गोमाता को दलिया, चारा, गुड़ खिला एवं अन्य प्रकार से गौमाता की सेवा कर सकते हैं। बहुत सुन्दर वातावरण है, एक बार गौशाला जरूर आयें।

शेष पृष्ठ 3 पर...

मासिक हवन

दिनांक : **रविवार, 2 फरवरी, 2025** • समय : **प्रातः 9.00 बजे** • स्थान : **गोशाला प्रांगण**

यजमान : **भीमसैन मित्तल**, से. 14, नोएडा; **सुनीता कंसल** व **मूलचन्द कंसल**, से. 50, नोएडा; **पवन गुप्ता** व **मंजू रानी**; **राकेश अग्रवाल**, से. 23, नोएडा; **नीरज गुप्ता**, ग्रेट वैल्यू शरणम्, से. 107, नोएडा; **एस.के. गुप्ता**, से. 46, नोएडा; **नरेन्द्र गुप्ता**, 49, यमुना विहार; **दिनेश गर्ग** व **कविता गर्ग**, से. 20, नोएडा।

भारतीय संस्कृति की मूलाधार - गौ

– योगी श्री आदित्यनाथ जी

गौ प्राचीन काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति–सभ्यता की मूलाधार रही है। भारतीय संस्कृति ने प्राचीन काल से ही गोभक्ति, गोपालन को अपने जीवन का सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य माना है। वेद–शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण तथा इतिहास गौ की उत्कृष्ट महिमाओं से ओत–प्रोत हैं। स्वयं वेद गाय को नमन करता है–

'अघ्न्ये ते रूपाय नमः'।

हे अवध्या गौ! तेरे स्वरूप को प्रणाम है। ऋग्वेद में कहा गया है कि जिस स्थान पर गाय सुखपूर्वक निवास करती है, वहाँ की रज तक पवित्र हो जाती है, वह स्थान तीर्थ बन जाता है। हमारे जन्म से मृत्यु पर्यन्त सभी संस्कारों में पंचगव्य और पंचामृत की अनिवार्य अपेक्षा रहती है। गोदान के बिना हमारा कोई भी धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता। गौ अपनी उत्पत्ति के समय से ही भारत के लिये पूजनीय रही है। उसके दर्शन, पूजन, सेवा–शुश्रूषा आदि में आस्तिक जन पुण्य मानते हैं। व्रत, जप, उपवास सभी में गौ और गोप्रदत्त पदार्थ परमावश्यक है। गाय का दूध अमृत–तुल्य होता है जो शरीर और मस्तिष्क को पुष्ट करता है। गोमूत्र गंगा जल के समान पवित्र माना जाता है और गोबर में साक्षात् लक्ष्मी का निवास है। शास्त्रों के अनुसार हमारे अंग–प्रत्यंग, मांस–मज्जा–चर्म और अस्थि में स्थित पापों का विनाश पंचगव्य (गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र एवं गोमय) के पान से होता है। आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी शरीर–स्वास्थ्य एवं रोग–निवृत्ति के लिये गाय के दूध, दही, मट्ठा, मक्खन, घृत, मूत्र, गोबर आदि का अत्यन्त उपयोग है।

गाय के शरीर में सभी देवताओं का निवास है। अतः गौ सर्वदेवमयी है। पुरातन काल से ही भारतीय संस्कृति में गाय श्रद्धा का पात्र रही है। भगवान् श्रीराम ने यौवन में प्रवेश करते समय अपने जीवन का लक्ष्य 'गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्यास्य सुखाय च' के पवित्र संकल्प की पूर्ति के लिये ही उद्घोषित किया था। गाय के प्रति भारतीय भावना कितनी श्रद्धा और कृतज्ञता से ओत–प्रोत थी, यह इस श्लोक से स्पष्ट होता है–

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

पुराणों में पद–पद पर गौ की अनन्त महिमा गायी गयी है। भारतीय संस्कृति ही नहीं, अपितु सारे विश्व में गौ का बड़ा सम्मान था। जैसे हम गौ की पूजा करते हैं, उसी प्रकार पारसी लोग साँड़ की पूजा करते हैं। मिश्र के प्राचीन सिक्कों पर बैलों की मूर्ति अंकित रहती है। ईसा से कई वर्ष पूर्व बने हुए पिरामिडों में बैलों की मूर्ति अंकित है।

भारतीय संस्कृति यज्ञ–प्रधान है। वेद, रामायण, महाभारत आदि धार्मिक तथा ऐतिहासिक ग्रन्थों में यज्ञ को ही सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यज्ञ करने से पृथिवी, जल, वायु, तेज, आकाश–इन पंचभूतों की शुद्धि होती है। पंचभूतों के सामंजस्य से मानव–शरीर बना है। अतः शरीर को सुरक्षित रखने के लिये पंचभूतों का शुद्ध रूपों में उपयोग आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। यज्ञ करने से जो परमाणु निकलते हैं, वे बादलों को अपनी ओर खींचते हैं। जिससे वर्षा होती है। यज्ञ में गाय के सूखे गोबर का प्रयोग किया जाता है। इस सूखे गोबर से एक प्रकार का तेज निकलता है, जिससे लाखों विषैले कीट तत्क्षण ही नष्ट हो जाते हैं। गौ के सूखे गोबर को जलाने से मक्खी–मच्छर आदि मर जाते हैं। गौ के दूध, दही और घी आदि में वे सब पौष्टिक पदार्थ विद्यमान हैं जो अन्य किसी दुग्धादि में नहीं पाये जाते। गोमूत्र में कितने ही छोटे तथा बड़े रोगों को दूर करने की शक्ति है, इसके यथाविधि सेवन करने से सभी प्रकार के उदर–रोग, नेत्ररोग, कर्णरोग आदि को मिटाया जा सकता है। कई संक्रामक रोग तो गौओं के स्पर्श की हुई वायु लगने से ही निवृत्त हो जाते हैं। गौ के सम्पर्क में रहने से चेचक–जैसे रोग नहीं होते। धर्म और संस्कृति की प्रतीक होने के साथ–साथ गाय भारत की कृषि–प्रधान अर्थ–व्यवस्था की भी रीढ़ है। कौटिल्य–अर्थशास्त्र में गोपालन और गोरक्षण को बहुत महत्त्व दिया गया है। जिस भूमि में खेती न होती हो उसे गोचर बनाने का सुझाव अर्थशास्त्र का ही है। गौ धर्म और अर्थ की प्रबल पोषक है। धर्म से मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा अर्थ से कामनाओं की सिद्धि होती है। इस प्रकार गौ से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसीलिये प्राचीन काल से ही गौ का भारतीय जीवन में इतना ऊँचा महत्त्व है। हमारे देश में गोपालन पश्चिमी देशों की भाँति केवल दूध के लिये नहीं होता है, प्रत्युत अमृततुल्य दूध के अतिरिक्त खेत जोतने के लिये एवं भार ढोने के लिये बैल तथा भूमि की उर्वरता बनाये रखने के लिये उत्तम खाद भी हमें गाय से प्राप्त होती है, जिसके अभाव में हमारे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का संकट किसी प्रकार दूर नहीं किया जा सकता। हमारे देश में लाखों एकड़ भूमि ऐसी है जहाँ ट्रैक्टरों का उपयोग ही नहीं किया जा सकता।

आज गौ को व्यावहारिक उपयोगिता की दृष्टि से भौतिक तुला पर तौला जा रहा है। हमें याद रखना चाहिये कि आज का भौतिक विज्ञान गौ की इस सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमोत्कृष्ट उपयोगिता का पता ही नहीं लगा सकता, जिसे भारतीय शास्त्रकारों ने अपनी दिव्य दृष्टि से प्रत्यक्ष कर लिया था। गौ की धार्मिक महानता उसमें जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म–रूप तत्त्वों की प्रखरता के कारण है, उनकी खोज तथा जानकारी के लिये आधुनिक वैज्ञानिकों के भौतिक यन्त्र सदैव स्थूल ही रहेंगे। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी की ओर अग्रसर "गैढ' विज्ञानवेत्ता भी गोमाता के लोम–लोम में देवताओं के निवास–रहस्य और प्रातः गोदर्शन, गोपूजन, गोसेवा आदि का वास्तविक तथ्य समझने में असफल रहा है। गौ का धार्मिक महत्त्व भाव–जगत् से सम्बन्ध रखता है और वह शास्त्र–प्रमाण द्वारा शुद्ध भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण से ही जाना जा सकता है। इन सब विशेषताओं के कारण गौ को भारतीय संस्कृति का मूलाधार कहा गया है।

(साभार : गो सेवा)

सम्पादकीय... (पृष्ठ 1 का शेष...)

हमारा राजनैतिक नेतृत्व इसको भली–भांति समझता है। अतः व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर इस ओर अग्रसर है।

आइये हम सभी यथा सम्भव गौ आधारित पदार्थों को अपने देनन्दिन जीवन में अपनायें और इस अभियान में सहयोगी बनें।

– आपका अपना

महेश बाबू गुप्ता

(mahesh@mbgupta.com)

अध्यक्ष की कलम से... (पृष्ठ 1 का शेष...)

हम सभी आपके उज्जवल भविष्य एवं सुख–समृद्धि की कामना करते हैं। आप सभी से अनुरोध है आप गौशाला का इसी प्रकार सहयोग एवं समर्थन करते रहें और हम गौशाला का पूर्ण निष्ठा से संचालन करते रहेंगे।

– आपका अपना

टी.एन. चौरसिया

(tnc_aig@rediffmail.com)

गौशाला में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

मासिक हवन की झलकियाँ

गौशाला में पिकनिक की झलकियाँ

गौशाला में गौ सेवा आयोग, उ.प्र. के अध्यक्ष भ्रमण करते हुए।

25 जनवरी, 2025 को गोमाता के लिये 56 भोग श्री मनीष अग्रवाल जी एवं परिवार द्वारा

श्री जी गौसदन नोएडा के प्रांगण में झंडा रोहण करते हुए

यू.पी. दिवस के अवसर पर श्रीजी गौसदन को उत्कर्ष गौसेवा पुरस्कार के किया सम्मानित किया

गौसदन में सहयोग के प्रकार

मासिक हवन (प्रातः 9 बजे)	: रू॰ 3,100/– (मास के प्रथम रविवार को – यजमान सहयोग)
गौग्रास योजना	: रू॰ 500 से 5,000/– तक मासिक
हरा चारा सहयोग	: रू॰ 5,100/–
सवामनी दलिया	: रू॰ 5,100/–
गाय अडॉप्शन योजना	: रू॰ 11,000/– (प्रति गाय) (प्रतिवर्ष – गाय की आयु तक)
गौदान	: रू॰ 31,000/–
छप्पन भोग	: रू॰ 31,000/–
भूसा सहयोग	: रू॰ 1,01,000/– (लगभग 1 ट्रक)
खल, चोकर व छिलका	: रू॰ 1,01,000/–

अपील

वर्तमान में गौशाला में लगभग 1600 से अधिक गोवंश हैं। भूसा/चारे का खर्च भी लगातार बढ़ रहा है। गोपाष्टमी में जिन बंधुओं ने भूसा दान की घोषणा की थी, उन सभी से विनम्र निवेदन है कि इस कार्य को यथाशीघ्र सम्पन्न करें।

श्री जी गोसदन

(पंजीकृत सोसायटी सं.–592, अधिनियम सं.–21, सन् 1860 के अर्न्तगत)

भूखण्ड सं. 7, सैक्टर 94, नौएडा (उ.प्र.)

मो. : 8882425010

ई–मेल : shreejeegausadan94@gmail.com

वेबसाइट : www.shreejeegausadan.com

अध्यक्ष : श्री टी.एन. चौरसिया (मो. : 9350556530)

महासचिव : सीए विकास अग्रवाल (मो. : 9810015863)

कोषाध्यक्ष : श्री प्रमोद शर्मा (मो. : 9810158266)

प्रबन्धक : श्री संतोष सिंह (मो. : 7428350639)

दान/सहयोग राशि हेतु जानकारी :

SHREE JEE GAUSADAN

Account No. : **923010022147753**

Name of Bank : **AXIS BANK**
Sector 44, Noida (U.P.)

IFSC Code : **UTIB0001788**

अथवा **QR** कोड स्कैन करें

PRAVEK

100% शुद्ध और पवित्र

200 मिली के पैक में उपलब्ध

गोजल

पाचन क्रिया सुधार हेतु

आयुर्वेद में गाय के गौमूत्र को एक संजीवनी कहा गया है, जो रोगों को भगाए और दीर्घायु प्रदान करे।

प्रवेक गोजल को आसवन के बाद काँच की बोतल में पैक किया जाता है, ताकि वह सभी अशुद्धियों से मुक्त हो व गोजल के स्वाभाविक रुपी अम्लीय गुणों से बचाता हो।

उपयोग

- कृमि रोग
- कण्डू रोग
- कुष्ठ रोग
- दोष जन्य उदर विकार
- अफारा
- मेदोरोग
- अध्यमान, आदि में लाभकारी

मात्रा

20 मिली प्रवेक गौजल को जल में मिलाकर दिन में एक बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

CUSTOMER CARE
+91 9990990999 | customercare@pravek.com
www.pravek.com